

जम्मू कश्मीर पहलगाम पर्यटन स्थल में सेना की वर्दी में आए चार पांच आतंकवादियों ने पर्यटन पर स्टील बुलेट से हमला कर 26 भारतीय तथा दो विदेशियों की निर्मम हत्या कर दी है। यह पुलवामा आतंकी हमले के बाद का सबसे बड़ा हमला है 28 मृतकों में अधिकांश पर्यटक हैं इसमें दो विदेशी तथा दो स्थानीय लोग शामिल हैं इसमें एक आईबी अफसर भी शामिल है। जात हो इस हमले की जिम्मेदारी टीआरएफ (दीरेसिस्टेंट फ्रंट) आतंकी संगठन ने अपने ऊपर ली है टीआरएफ संगठन लश्कर तैयार पाकिस्तानी आतंकवादी संगठन है जिसको पाकिस्तान की सरकार और आई एस आई का खुला समर्थन प्राप्त है एवं पाकिस्तान सेना इन्हें हथियार तथा धन मुहैया करती है। यह हमला स्टील बुलेट से किया गया स्टील बुलेट चौन द्वारा पाकिस्तान सेना को युद्ध के लिए दी जाती है और यह स्टील बुलेट पाकिस्तान सुना ने लश्कर तैयार के लड़ाकू आतंकवादियों को इस घटना को अंजाम देने के लिए दी गई थी। दुखद बात यह है कि आतंकवादियों ने पर्यटकों से उनका धर्म पूछे पूछ कर पुरुषों को गोली मारी एवं महिलाओं को छोड़कर उनसे कहा गया है कि अपनी सरकार को बता देना। इन सभी मृतक पर्यटकों में महाराष्ट्र राजस्थान उड़ीसा छत्तीसगढ़ एवं देश के अन्य राज्यों के निवासी शामिल हैं। जिस घोड़े के रेसकोर्स मैदान में निर्दोष पर्यटकों को मारा गया वहाँ पूरे मैदान में कहीं छुपने की जगह भी नहीं थी ऐसे में पर्यटक असहाय तथा असमर्थ थे। कुल मिलाकर यह एक दर्दनाक एवं निर्मम हत्याकांड को आतंकवादियों द्वारा अंजाम दिया गया ऐसे में अब आतंकवादियों तथा उनकी सोच को सम्भव नह इया जाना चाहिए। यह आलेख लिखते समय जानकारी मिली है कि अनुसार दो आतंकवादियों को सेवा के जवानों ने मार गिराया है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस घटना की निंदा कर भारत को संपूर्ण समर्थन देने का वादा किया है दूसरी तरफ रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन एवं फ्रांस, कनाडा, इंडिया एवं अन्य यूरोपीय देशों में भी भारत का समर्थन किया है। यह हमला भी ऐसे समय में किया गया है जब अमेरिका को राष्ट्रपति कई सामरिक तथा व्यापारिक अनुबंधों पर चर्चा एवं हस्ताक्षर करने चार दिन की यात्रा पर भारत पधरे हैं, इसके अलावा वक्फ बोर्ड पर मुसलमान लगातार हड्डल कर रहे हैं साथ ही प्रधानमंत्री सऊदी अरब की 2 दिन की यात्रा पर हैं। यह ऐसे समय टीआरएफ ने जानबूझकर चुना जिसमें सरकार का ध्यान इन पर ना जा सके।

गुरुकुल से गूगल तक



सुबह-सुबह जब मोबाइल के अलाएं ने करक्षण आवाज में नींद को तोड़ा, तो सबसे पहले नजर एक मैसेज पर पड़ी झा बच्चे का भविष्य उज्ज्वल बनाइए, सिर्फ चार लाख रुपए में। इसे पढ़ते ही ऐसा लगा, जैसे भविष्य उज्ज्वल होने से पहले ही अंधकार में ढूँढ गया हो। यही हाल हर सुबह के अखबार का होता है झा हर कोने में चमचमाते विज्ञापन, जैसे शिक्षा अब एक जादुई किट हो, जो खरीदी जा सकती है। लाल नींद पारापार में तै

हां याव का पाठ्याला म बठ-
कर मिट्टी के फर्श पर अपने भविष्य की कल्पना करने वाले बच्चे अब
वातानुकूलित कक्षाओं में भी वही सपने देख रहे हैं। फर्क सिर्फ इतना
है कि वहां पर गुरुजी होते थे और वहां फीस स्लिप। पढ़ोगे लिखोगे
बनोगे नवाब वाला मुहावरा अब पढ़ोगे जितना, लगेगा उतना में तब्दील
हो गया है। शिक्षा का व्यवसायीकरण हो चुका है, जैसे ज्ञानभी अब
ईमआई पर मिल रहा हो। मालूम हुआ कि दिल्ली के एक नामी स्कूल
ने यूनिफॉर्म डिजाइन के नाम पर बच्चों को फैशन शो का प्रतिभागी बना
दिया। सबाल यह है कि विद्या का मंदिर क्या अब रैप वॉक बन गया
है? पुराने जमाने की सादा सफेद शर्ट और खाकी निकर आज ब्रॉडेड
टाई और स्मार्टफोन ऐप में सिमट गए हैं। शिक्षा के नाम पर यह व्यापार
इतना जबरदस्त है कि माता-पिता अपनी महिने की सैलरी स्कूल की
फीस भरने में ही गांव देते हैं। और इन स्कूलों के आयोजनों में बच्चे
देश का भविष्य हैं कहने वाले वक्ता खुद के बच्चों को विदेश भेज चुके
होते हैं। हाँ, यह वही लोग हैं, जो देशभक्ति का झंडा बुलंद करते समय
किसी डिक्षणनी में नैतिकता को खोज रहे होते हैं। गांव के उस मास्ट-
रजी का क्या हुआ, जिनके पढ़ाए बच्चे आईएएस, डॉक्टर और
इंजीनियर बने? उनका संघर्ष और तपस्या क्या सिर्फ इसीलिए बेमानी
हो गई, क्योंकि उन्होंने बच्चों से कभी आय के दस्तावेजनहीं मांगे?
यही सोचते-सोचते एक सबल आया आज शिक्षा का स्तर ऊंचा है या
सिर्फ फीस की स्लिप भारी हो गई है? और फिर, शिक्षा के डिजिटल
रूपांतरण ने तो सभी सीमाएं पार कर दी हैं। गुरु अब गूगल बन चुका
है। छात्र प्रश्न पूछते नहीं, बल्कि सर्च करते हैं। स्कूल अब ई-लॉन्गिंग
प्लेटफॉर्म बन चुके हैं, जहां टीचर की जगह एआई की स्मार्ट
टेक्नोलॉजी बच्चों को पढ़ाती है। लैकिन क्या उस एआई में मास्टरजी
की वह डाट है, जो बच्चों को सुधार देती थी? या वह व्यार, जो
हाँमवर्क न करने पर भी चॉकलेट दे देता था? कहानी का यह अंत
वही है, जो हर मिडिल क्लास माता-पिता की पीड़ा का होता है।
उनके सपने बच्चे के स्कूल बैग के बजन तले दब जाते हैं, और वे
सोचते हैं कि कहीं फीस भरने के चक्कर में उनके बच्चे का मासूम
बचपन न छूट जाए।

भारत के यात्रा पर आए अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने भी पहलगाम आतंकी हमले पर संवेदना प्रकट की



लेखक: अशोक भाटिया

Jम्यू-कश्मीर के पहलगाम में पार्टकों पर हुए आतंकी हमले का लोकर भारत की यात्रा पर आए अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने दुख जाता है। उन्होंने एक्स पर पोस्ट में पीड़ितों के प्रति अपनी संवेदनापूर्ण प्रकट की और इस हमले को बेहद दुखद बताया। साथ ही कहा कि हमारी भावनाएं और प्रार्थनाएं यहाँ के लोगों के साथ हैं। जेडी वेंस चार दिन की भारत यात्रा पर सोमवार को ही भारत पहुंचे थे। उन्होंने एक्स पर कहा, 'हमारी और मैं भारत के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के पीड़ितों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हैं। पिछले कुछ दिनों में हम इस देश और इसके लोगों की खूबसूरती से अभिभूत हो गए हैं। इस भयनक हमले में हमारी भावनाएं और प्रार्थनाएं उनके साथ हैं। यही नहीं जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले की चौतरफा निंदा हो रही है। साल 2019 में हुए पुलवामा हमले के बाद कश्मीर घाटी में हुआ से सबसे बड़ा हमला है, जिसने एक बार फिर से झकझोर कर रख दिया है। दहशतगर्दी की इस कायराना हरकत ने 30 लोगों की जान ले ली। देश ही नहीं बल्कि दुनियाभर के तमाम देशों ने घटना पर दुख जाहिर करते हुए इसकी निंदा की है। हम बात कर रहे थे अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। एक आधिकारिक बयान में कहा गया कि प्रधानमंत्री मोदी और उपराष्ट्रपति वेंस ने द्विक्षीय सहयोग के विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति की समीक्षा की और उसका सकारात्मक मूल्यांकन किया। बताया जाता है कि जेडी वेंस और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बीच हुई बातचीत से दोनों देशों के बीच अधिक संबंधों में उल्लेखनीय प्रगति दिखी दूसरा प्रधानमंत्री के सामने एक बैठक में वेंस के पहुंचने की तस्वीरें आज जारी की गई हैं। यह देखते हुए, यह मान लेना सुरक्षित है कि चर्चा बहुत ही चंचल माहोल में हुई थी। संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में डोनाल्ड ट्रम्प के दूसरे कार्यकाल के बाद से, अंतरराष्ट्रीय कूटनीति ने एक नए आयाम पर ले लिया है। क्वाइट हाउस में, ट्रम्प के सबसे करीबी सहयोगी एलोन मस्क के बीटे और बैटी, मेहमानों के सामने खेल रहे हैं, उनके एक दर्जन से अधिक बच्चों में से एक उनके वास्तविक सिर पर बैठा है, दूसरे को अमेरिका राष्ट्रपति द्वारा तैयार किया जा रहा है, और किसी और को शाही अधिकथ के रूप में खेला जा रहा है, और ट्रम्प का पारिवारिक स्तर पर अंतरराष्ट्रीय कूटनीति लाने का प्रयास राजनीति में पारिवारिक स्थितों के महत्व को रेखांकित करता है। क्षेत्रों में ट्रम्प का अनुभव काफी व्यापक है, और मस्क कम से कम चार जात परिवारों का अनुयायी है। वेंस बचपन से अपने बच्चों के लिए ट्रम्प-मस्क के कूटनीति के उपयोग का अनुकरण करते हैं। वैसे भी। यह मामला हो सकता है, लेकिन प्रधान मंत्री-उपराष्ट्रपति की यात्रा पर कोई आधिकारिक संयुक्त बयान जारी नहीं किया गया है। हालांकि, दोनों पक्षों ने कहा कि वार्ता 'बहुत सार्थक' रही। अब इस 'फला' की व्याख्या करने की ज़रूरत है। इस बात का खुलासा खुद वेंस ने जयपुर में अपने भाषण में किया। भारत को अमेरिका से ज्यादा से ज्यादा हथियार मिले, अमेरिकी उत्पादों के लिए ज्यादा से ज्यादा बाजार मिले, भारत अमेरिकी अनाज से ज्यादा एथेनोलॉल खरीदे, भारतीय वाहनों में अमेरिकी एथेनोलॉल का इस्तेमाल शुरू करे, हमारे एफ-35 विमान भारत की रक्षा में निर्णायक भूमिका निभाएंगे। वेंस की यात्रा के पीछे का अधिक विचार परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में अमेरिकी कंपनियों को अधिक आसान पहुंच प्रदान करना है, ताकि भारत भारतीय ऊर्जा सुरक्षा के लिए बड़े पैमाने पर अमेरिकी इंधन उत्पादों का उपयोग कर सके। उन्होंने कहा कि अनेक वाली सदी भारत और अमेरिका के बीच होगी और दोनों देशों को 'समान सिद्धांत' पर व्यापार बढ़ाना चाहिए। समाज-सम्मत। मकसद है कि दोनों देशों के बीच जल्द से जल्द ट्रेड डील हो जाए। उपराष्ट्रपति वेंस की भारत यात्रा इसी के अनुरूप थी। वैसे ने कहा कि बैठक के दौरान व्यापार समझौते पर अच्छी प्रगति हुई, वित्त मंत्री सीतारमण ने कहा कि अवटूबर दोनों देशों के बीच पहले समझौते को वास्तविकता में बदलने का समय होगा। ऐसा लगता है कि वेंस की भारत यात्रा में इस मुद्दे पर प्रगति करने में कम से कम चार से पांच महीने लग गए हैं, जिसका अर्थ है कि अगर यह संयुक्त राज्य के लिए नहीं होती और अपेक्षित प्रगति हुई होती, तो समझौते में और दोहरी होती होती क्योंकि ट्रम्प के अनुसार, भारत अमेरिकी सामान उतना नहीं आ जाएगा। अब इस बात का खुलासा खुद वेंस ने जयपुर में अपने भाषण में किया। भारत को अमेरिका से ज्यादा से ज्यादा हथियार मिले, अमेरिकी उत्पादों के लिए ज्यादा से ज्यादा बाजार मिले, भारत अमेरिकी अनाज से ज्यादा एथेनोलॉल खरीदे, भारतीय वाहनों में अमेरिकी एथेनोलॉल का इस्तेमाल शुरू करे, हमारे एफ-35 विमान भारत की रक्षा में निर्णायक भूमिका निभाएंगे। वेंस की यात्रा के पीछे का अधिक विचार परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में अमेरिकी कंपनियों को अधिक आसान पहुंच प्रदान करना है, ताकि भारत भारतीय ऊर्जा सुरक्षा के लिए बड़े पैमाने पर अमेरिकी इंधन उत्पादों का उपयोग कर सके। उन्होंने कहा कि अनेक वाली सदी भारत और अमेरिका के बीच होगी और दोनों देशों को 'समान सिद्धांत' पर व्यापार बढ़ाना चाहिए। समाज-सम्मत। मकसद है कि दोनों देशों के बीच जल्द से जल्द ट्रेड डील हो जाए। उपराष्ट्रपति वेंस की भारत यात्रा इसी के अनुरूप थी। वैसे ने कहा कि बैठक के दौरान व्यापार समझौते पर अच्छी प्रगति हुई, वित्त मंत्री सीतारमण ने कहा कि अवटूबर दोनों देशों के बीच पहले समझौते को वास्तविकता में बदलने का समय होगा। ऐसा

जर्मनी के अधिकारी पहलगाम टूरिस्टों पर आतंकी हमला-पूरी दुनियाँ ने भारत के समर्थन में आतंकवाद के खिलाफ उठाई आवाज़।

जम्मू कश्मीर पहलगाम ट्रॉयस्टों पर आतंकी हमला-पूर्ण दुनिया ने भारत के समर्थन में आतंकवाद के खिलाफ उठाई आवाज़



લખફ: ઇક્ષાન ભાવનાના

व विक स्ट्रोप हर दश के लिए आतंकवाद एक नासूर बन गया है, जिसका दंश अनेक बार अनेकों देश झेल चुके हैं और झेल भी रहे हैं, जिसका अधिक भुक्त भोगी भारत भी रहा है। आज हम फिर आतंकवाद पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि दिनांक 22 अप्रैल 2024 को शाम अनंतनाग जिले के पहलगाम की घाटियों में, जहां एक भा डड लाइन धारित करने का जरूरत ह ताक एक रणनीति के अनुसार आतंकवादियों को आत्मसमर्पण के लिए प्रेरित करना या फिर उन्हें कड़ी सजाका सामना करना पड़े यानें आरोप लगने पर या पकड़े जाने पर उनकी सुनवाई, अन्य राज्यों में न्यायालयों मैं की जानी चाहिए तथा इसके पीछे स्लीफिंग आतंकी चेहरे या गुट भारत के साथ खड़ा है पूरी दुनिया ने भारत के समर्थन का जा कुछ छिलाना म शुरू हान वाला ह उसम दहशत का माहात्म बनाया जा रहा है, इसलिए अब इस घटना का जवाब देना जरूरी हो गया है चौंक पहलगाम टूरिस्टों पर आतंकी हमला, 27 से अधिक मृत, अनेकों घायल, अमेरिका रूस सहित पूरा विश्व स्कट की घड़ी मैं, या गुट

घासभरा मेदान है, वहां कुछ दूर पैदल जाकर ही पहुंचा जा सकता है, जहां रेस्टोरेंट विंगरा भी है अचानक कुछ आतंकवादियों का एक गुट आया और टूरिस्ट से उनका नाम जाति पूछ थूँठ कर अंधाधुध गोलियां दागी जिसमें निर्दोष लोग करीब 27 से अधिक टूरिस्टों की मौत होने व अनेकों घायल होने की जानकारी 22 अप्रैल शाम से डिजिटल तथा इलेक्ट्रॉनिक व सोशल मीडिया पर लगातार चल रही है जो 23 अप्रैल 2025 तक अलीं मॉनिंग तक मैं खुद करीब 18 घण्टों तक इलेक्ट्रॉनिक व डिजिटल संसाधनों से जुड़ा रहा। सभी चैनलों पर डिब्बेट, एक्सपर्ट की राय, व एनालिसिस को सुनकर, मैंने उसका विश्लेषण कर यह आर्टिकल तैयार किया हूँ। बता दें पूरे विश्व में इस घटना को सीरियस एंगल से लिया गया है तथा तीव्र निषेध किया हैं। जहां एक ओर हमारे गृहमंत्री तुरंत घटनास्थलपर रवाना होकर कश्मीर हुई, हाइ प्रोफाइल मार्टिंग में भी ऑनलाइन जुड़ रह तथा अलीं मॉनिंग वापस आकर बुधवार दिनांक 23 अप्रैल 2025 को सुबह केविनेट कमिटी ऑन सिक्योरिटी (सीसीएस) में भी मौजूद रहे व अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से भी वातालांग करने की जानकारी आई है। बता दें इस घटना की निंदा अमेरिका रूस इसराइल सऊदी अरब यूक्रेन ब्राजील सहित अनेक देशों ने ट्रॉट करके की है, तथा मुश्किल की घड़ी में भारत के साथ होने की बात कही है। भारतीय पीएम दोरे पर सऊदी अरब हुए हैं। भारत में चार दिवसीय दोरे पर मौजूद अमेरिका के उपराष्ट्रपति ने भी घटना की कड़े शब्दों में निंदा की है। मेरा मानना है कि अब समय आ गया है कि नक्सलवाद माओवाद को जिस तरह समाप्त करने की डेढ़लाइन 31 मार्च 2026 तक की गई है, अब इस तरह कश्मीर घाटी में आतंकवाद समाप्त करने की उजगार करना आर्थिक, कमर तोड़ना, पोषण कराने वाले पड़ोसीमुल्क पर आर्थिक सामाजिक, नैतिक, अंतर्राष्ट्रीय व जरूरत पड़ने पर हथियारों करना समय की मांग है, ताकि यह संदेश जाए कि अब भारत पहले वाली स्थिति में नहीं रहा, जब कि अब इंट का जवाब पत्थर से व तिल का जवाब पहाड़ से देने की स्थिति रखता है। कुल मिलाकर मुझे ऐसा महसूस होता है कि आतंकवाद की उल्टी गिनती शुरू होने की संभावना बढ़ गई है, क्योंकि अब अति सख्त रणनीति बनाई जा सकती है। उधर आतंकवादी नरसंहार के विरोध में कश्मीर के बार काउंसिल, डोडा काउंसिल डोडा शिक्षा विभाग, अनेक लोकल संगठनों व संस्थाओं ने 23 अप्रैल 2025 को बंद का आह्वान किया है, क्योंकि नागरिक बहुत रोष में हैं, जहां जगह-जगह कैंडल मार्च में शांति मर्चा निकाला जा रहा है, अभी अपरनाथ यात्रा में आतंकवाद के खिलाफ आवाज उठाइ है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्धजानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, भारत में नक्सलवाद माओवाद समाप्ति की डेढ़ लाइन 31 मार्च 2026 की तरह जम्मू कश्मीर में भी आतंकवाद समाप्त होने की डेढ़लाइन पर सटीक निर्णय लेना समय की गंभीर मांग है। साथियों बात अगर हम जम्मू कश्मीर के अनंतनाग जिले के पहलगाम में 22 अप्रैल 2025 को शाम टूरिस्टों पर अंधाधुंद गोली चलाकर आतंकवादी नरसंहार के दोपहर करीब तीन बजे आतंकियों द्वारा की गई गोलीबारी। आतंकी हमले में करीब 27 लोगों की मौत हो गयी। आतंकी हमले में मारे गये लोगों में ज्यादातर पर्यटक थे। यह हमला 2019 के पुलवामा हमले के बाद घाटी में सबसे घातक हमला बताया जा रहा है।

क्या है देश के अपमान की परिभाषा

इसीलिये इन्हें नेहरू गांधी परिवार की बातों में ही 'बतंगड़' बनाने की सामग्री तलाशनी होती है। खासकर राहुल गांधी जो बातें अपने देश में भी करते हैं यहीं बात यदि वे विदेश में जाकर करें तो इन्हें यह सब 'विदेशी धरती पर देश का अपमान करना' नजर आता है। वैसे भी राहुल गांधी ने अमेरिका में बोस्टन की ब्राउन यूनिवर्सिटी में जाकर कौन सी ऐसी नई बात कह दी या नया आरोप लगा दिया जो वे यहाँ संसद से लेकर अपनी जनसभाओं या पत्रकारों के समक्ष नहीं उठाते रहे हैं? वे अनेक बार भारतीय चुनाव आयुक्त और चुनावी प्रक्रिया पर सवाल उठा चुके हैं। वहाँ भी उन्होंने चुनाव आयोग पर समझौता करने का आरोप लगाया और महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में मतदान के आंकड़ों में गड़बड़ी का वहाँ दावा किया जो यहाँ भी कई बार कर चुके हैं।

का ग्रेस नेता व सांसद राहुल गांधी देश विदेश में कहीं भी बोलते हैं तो उनके एक एक शब्द पर सत्ताधारी दल के नेताओं के कान लगे होते हैं। शायद भारतीय जनता पार्टी के नेता प्रधानमंत्री के भाषण को भी इतने गौर से न सुनते हों जितने कि राहुल गांधी व सांसद प्रियंका गांधी व सेनियर गांधी के भाषण सुन जाते हों। जाहिर है लगभग 11 वर्ष तक केंद्र में सरकार चलाने के बावजूद चौंक अभी भी नेहरू गांधी परिवार वर्तमान सत्ता को सीधे तौर पर चुनौती दे रहा है और सांसद से लेकर सड़कों तक सत्ता से ऐसे सवाल पूछ रहा जिसका जवाब देने से सत्ता कतरती रहती है। इसीलिये इन्हें नेहरू गांधी परिवार की बातों में ही 'बत्टांग' बनाने की समग्री तलाशनी होती है। खासकर राहुल गांधी जो बातें अपने देश में भी करते हैं यही बात यदि वे विदेश में जाकर करें तो इन्हें यह सब 'विदेशी धरती पर देश का अपमान करना' नजर आता है। वैसे भी राहुल गांधी ने अमेरिका में बोस्टन की ब्राउन यूनिवर्सिटी में जाकर कौन सी ऐसी नई बात कह दी या नया आरोप लगा दिया जो वे यहाँ संसद से लेकर अपनी जनसभाओं या पत्रकारों के समक्ष नहीं उठाते रहे हैं? वे अनेक बार भारतीय चुनाव आयुक्त और चुनावी प्रक्रिया पर सवाल उठा चुके हैं। वहाँ भी उन्होंने चुनाव आयोग पर समझौता करने का आरोप लगाया और महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में मतदान के आंकड़ों में गड़बड़ी का बही दावा किया जो यहाँ भी कई बात नहीं आपत्ति केवल यह है कि उन्होंने यह सब अमेरिका में जाकर क्यों कह दिया? दरअसल राहुल गांधी ने पिछले दिनों अमेरिकी ब्राउन यूनिवर्सिटी में अपने संबोधन में कहा था कि - 'यह बिल्कुल स्पष्ट है कि चुनाव आयोग ने समझौता कर लिया है और सिस्टम में कुछ गड़बड़ है।' मैंने यह कई बार कहा है। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में महाराष्ट्र में वरस्तों की संख्या तक सीमित रखा जा सके? जब युद्ध के मैदान से सीधी खबरें पलक झपकते पौरे विश्व में पहुंच जाती हैं तो मीडिया सम्बोधन में तो वैसे भी विश्व के संवाददाता मौजूद रहते हैं। सब कुछ 'लाईव' चल रहा होता है। फिर यह तो बहुत ही बचकानी सी बात है कि राहुल ने यह बात विदेश में क्यों कह दी? और इसी बहाने सत्ता सुख भोगे वालों ने अपने आकर को न केवल अपनी 'आक्रामक सक्रियता' जताने के लिये बल्कि अपने पद व राजनैतिक भविष्य को सुरक्षित रखने के लिये राहुल गांधी के प्रति तरह तरह के अपशब्द कह डाले। इस तिलमिलाहट के एक मायने तो यह भी है कि यही आरोप राहुल गांधी भारत में ही लगाये तो कोई बात नहीं आपत्ति केवल यह है कि उन्होंने यह सब अमेरिका में जाकर क्यों कह दिया? दरअसल राहुल गांधी ने पिछले दिनों अमेरिकी बार इसकी रिपोर्टिंग भी कर चुका है। अमेरिकी अखबार पूर्व में जहां भारत जैसे विशाल और जटिल देश में बढ़े पैमाने पर स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव करने की क्षमता, भारतीय चुनाव आयोग की इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (एसट) जैसी तकनीकी प्रगति व मतदाता जागरूकता अभियानों की तारीफ कर चुके हैं वहाँ इन्हें अमेरिकी अखबारों द्वारा 2019 और 2024 के लोकसभा चुनावों के दौरान चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर सवाल उठाने वाले लेखी भी लिखे जा चुके हैं। द वाशिंगटन पोस्ट और न्यूयॉर्क टाइम्स जैसे प्रमुख अखबारों द्वारा अपने लेखों में भारतीय चुनाव आयोग पर सत्तारूढ़ दल (विशेष रूप से भारतीय जनता पार्टी) के प्रति कथित पक्षपात के आरोपों का जिक्र किया जा चुका है। जब हमने उनसे वीडियोग्राफी देने के लिए कहा तो उन्होंने न केवल मना कर दिया, बल्कि उन्होंने कानून भी बदल दिया ताकि हम वीडियोग्राफी के लिए न कह सकें यही सवाल को ग्रेस विषयक द्वारा संसद में मीडिया में और चुनाव आयोग के समाने भी उठाये जा चुके हैं। और विदेशी मीडिया अनेक बार इसकी रिपोर्टिंग भी कर चुका है। अमेरिकी अखबार पूर्व में जहां भारत जैसे विशाल और जटिल देश में बढ़े पैमाने पर स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव करने की क्षमता, भारतीय चुनाव आयोग की इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (एसट) जैसी तकनीकी प्रगति व मतदाता जागरूकता अभियानों की तारीफ कर चुके हैं वहाँ इन्हें अमेरिकी अखबारों द्वारा 2019 और 2024 के लोकसभा चुनावों के दौरान चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर सवाल उठाने वाले लेखी भी लिखे जा चुके हैं। इसलिए निर्वाचित जनप्रतिनिधियों का अपनी ग्राम पंचायत क्षेत्र के लोगों से सीधा संपर्क रहता है। ग्रामवासी भी अपनी समस्याएं सीधे पंचायत तक पहुंचा सकते हैं। मगर ग्राम पंचायतों की स्थापना के इतने बीचों के बाद भी अभी तक ग्राम पंचायत वास्तविक रूप में सशक्त नहीं हो पाई है।

A group of approximately ten men of diverse ethnicities and ages are walking together outdoors. In the foreground, a man with a beard and short hair, wearing a bright blue polo shirt, holds a brown paper-wrapped bouquet of flowers in his left hand. He is looking towards the right. Behind him, several other men are dressed in business attire, including suits and ties. The background shows a modern building with large glass windows and a clear sky.

संपादक के नाम पत्र

सशक्त पंचायतों से ही बनेगा विकसित राष्ट्र

भारत गांवों का देश है। यहां की बहुसंख्यक आबादी आज भी गांवों में रहती है। भारत के गांव ही देश की अर्थव्यवस्था की मुख्य धरी है। इसलिए कहा जाता है कि जब तक देश कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत नहीं होगी तब तक भारत विकासित राष्ट्र नहीं बन पाएगा। गांव में सुशासन स्थापित करने के लिए ही ग्राम पंचायत की स्थापना की गई थी। हमारे देश के नेताओं को ग्रामीण पृथग्भूमि का पूरा ज्ञान था। इसलिए उन्होंने गांव के महत्व को समझकर ग्रामीण क्षेत्र के सर्वांगीन विकास के लिए पंचायती राज व्यवस्था की स्थापना की थी। उनको पता था कि जब तक गांव मजबूत नहीं होगे तब तक देश मजबूत नहीं होगा। गांव को मजबूत करने के लिए यहां मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाना सबसे महत्वपूर्ण कार्य था। आजादी के समय भारत के गांव बहुत पिछड़े हुए थे। देश के अधिकाश गांवों में मूलभूत सुविधाओं के नाम पर कुछ नहीं था। मगर आज गांवों की व्यवस्था भी बहुत कुछ बदल गई है। आज देश के बहुत से गांवों में शाहरों की भासि सुविधा देखने को मिल रही है। लेकिन आज भी देश में हजारों ऐसे गांव हैं जहां पर्याप्त मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध नहीं हो पाई जाती है। जब तक सरकार देश के सभी गांवों में समान रूप से सुविधा उपलब्ध नहीं करवा पाएगी तब तक देश विकास की दौड़ में पूरी गति से शामिल नहीं हो पाएगा। हम आज पंचायती राज दिवस मना रहे हैं। हमारे देश में 2 अक्टूबर 1959 को पहली बार पंचायती राज व्यवस्था लागू की गई थी। 1993 में ब्रिटिश राज पंचायती राज व्यवस्था को संवैधानिक दर्जा प्राप्त हुआ था। राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस भारत में बहुत महत्व रखता है क्योंकि यह एक संवैधानिक इकाई के रूप में पंचायती राज प्रणाली की स्थापना का प्रतीक है। पंचायती राज प्रणाली भारत की लोकतात्रिक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका उद्देश्य स्थानीय स्तर पर पर सत्रा और संसाधनों का विकासिकरण करना और सहभागी लोकतंत्र, सामाजिक न्याय और समावेशी विकास को बढ़ावा देना है। पंचायती राज प्रणाली जमीनी स्तर पर लोगों को निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भाग लेने और उनके विकास का स्वामित्व लेने में सक्षम बनाती है, जो स्व-शासन और जवाबदेही को बढ़ावा देने में मदद करती है। भारत गांवों का देश माना जाता है और गांव के विकास में पंचायतों की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है। चूंकि ग्राम पंचायतों के पंच व सरपंच सीधे ग्रामीणों द्वारा चुने जाते हैं। इसलिए निर्वाचित जनप्रतिनिधियों का अपनी ग्राम पंचायत क्षेत्र के लोगों से सीधा संपर्क रहता है। ग्रामवासी भी अपनी समस्याएं सीधे पंचायत तक पहुंचा सकते हैं। मगर ग्राम पंचायतों की स्थापना के इन्हें वर्षों के बाद भी अभी तक ग्राम पंचायत वास्तविक रूप में सशक्त नहीं हो पाई जाती है।



रमेश सर्वाफ धमोरा

युनौती भरा सफर तय कर सलोनी बनी कस्टम इंस्पेक्टर, सेंट जॉन्स स्कूल में हुआ भव्य स्वागत

पहल टुडे

गोला गोकर्णनाथ खीरी। अंधेरा जितना गहरा होगा, सुबह उतनी ही नरदीक होगी। इस कहावत को चरित्रात्मक किया है गोला नगर की भटपुरुच कलोनी की बेटी सलोनी सिंह ने। सीमित संसाधनों और साधारण परिवेश से निकलकर, सलोनी ने अपने हैसले, मेहनत और आत्मविश्वास के दम पर कस्टम इंस्पेक्टर (एजामिनर) के पद पर चयनित होकर न केवल अपने परिवार, बल्कि पूरे क्षेत्र का सिर गर्व से चाह कर दिया है। विद्यालय ने बढ़ाया मान, सलोनी का हुआ भव्य स्वागत सलोनी ने इस खुशी को बात जब सेंट जॉन्स सोनियर सेंकंडरी स्कूल, गोला के प्रधानाचार्य फादर अनुप टिक्की को बताई—जहाँ से सलोनी ने 2017 में 12वीं तक की शिक्षा प्राप्त



की थी—तो विद्यालय प्रशासन सलोनी को शॉल पहनाकर और पुष्पगृह भेंट कर सम्मानित किया। उहनें कहा, सलोनी ने यह सभी नहीं हर सका। बुधवार 23 अप्रैल की सुबह प्रथमांश सभा में सलोनी का विद्यालय परिसर में अवृत्ति किया है जिसे मजबूत होने तक कोई भी बाधा रास्ता नहीं रोक सकती। संघर्षों से भरी राह और गरमजोरी और समान के सच वह संकल्प किया। अब उनका चयन कस्टम इंस्पेक्टर (एजामिनर) पद के लिए हुआ है। सलोनी ने बढ़ाया कि उहने एस सी सोनीएन की तैयारी शुरू की और महिला वर्ग में परायी स्वागत सामान प्राप्त किया। अब उस प्रावृक्ष काण्डा के संज्ञव्र प्रमाण था। विद्यालय प्रांगण तालियों की गूंज और स्टैफिंग से भर गया था। विद्यालय के लिए उहने सलोनी के सफर आसान नहीं था। भटपुरुच कलोनी जैसे क्षेत्र में, जहाँ शिक्षा

को लेकर आज भी कई तरह की चुनौतियां हैं, वहाँ से निकलकर सलोनी ने गोला में अपने ताऊ के घर रहकर पढ़ाई की और सेंट जॉन्स स्कूल से इंटरमीडिएट तक की शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद उहने कम लगाने नहीं इंस्ट्रीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, सुलतानपुर से बोटेक किया। बोटेक के बाद उहने एस एस सी सोनीएन की तैयारी शुरू की और महिला वर्ग में परायी स्वागत किया। अब उनका चयन कस्टम इंस्पेक्टर (एजामिनर) पद के लिए हुआ है। सलोनी ने बढ़ाया कि उहने एस सी सोनीएन की तैयारी शुरू की और महिला वर्ग में परायी स्वागत किया। अब उस प्रावृक्ष काण्डा के संज्ञव्र प्रमाण था। विद्यालय प्रांगण तालियों की गूंज और स्टैफिंग से भर गया था। वह दिन सेंट जॉन्स स्कूल के लिए विशेष था—जब उसके एक गुप्त फोटो भी खिंचवाया जा रहा था। विद्यालय के लिए उहने सलोनी के सफर आसान नहीं था। भटपुरुच कलोनी जैसे क्षेत्र में, जहाँ शिक्षा

सलोनी को शॉल पहनाकर और पुष्पगृह भेंट कर सम्मानित किया। उहनें कहा, सलोनी ने यह सभी नहीं हर सका। बुधवार 23 अप्रैल की सुबह प्रथमांश सभा में सलोनी का विद्यालय परिसर में अवृत्ति किया है जिसे मजबूत होने तक कोई भी बाधा रास्ता नहीं रोक सकती। संघर्षों से भरी राह और गरमजोरी और समान के सच वह संकल्प किया। अब उनका चयन कस्टम इंस्पेक्टर (एजामिनर) पद के लिए हुआ है। सलोनी ने बढ़ाया कि उहने एस सी सोनीएन की तैयारी शुरू की और महिला वर्ग में परायी स्वागत किया। अब उस प्रावृक्ष काण्डा के संज्ञव्र प्रमाण था। विद्यालय प्रांगण तालियों की गूंज और स्टैफिंग से भर गया था। विद्यालय के लिए उहने सलोनी के सफर आसान नहीं था। भटपुरुच कलोनी जैसे क्षेत्र में, जहाँ शिक्षा

अलग-अलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

हमला, कई लोग घायल, मुकदमा दर्ज

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

9 जुआदी पकड़े ताश की गड़ी व 2500/नगद बरामद

पहल टुडे

एलग-एलग जगह फड़ लगा कर जुआ खेल रहे

